



SHRI C. KAMLOVA

Shri C. Kamlova, a retired teacher from the Government of Mizoram, is a renowned Litterateur from Mizoram. He is one of the few protagonists in the field of propagating the Hindi language in Mizoram.

2. Born on 17th November, 1948 in a small Village called Mampui in the then Chhimptuipui District (now Lawngtlai District), at the age of 6, Shri Kamlova, accompanied his father who had been serving in the 7th Assam Rifles, at various places of postings. At the age of 13 when his father went back to Mizoram on retirement, young Shri Kamlova continued to stay in NEFA (now Arunachal Pradesh) where he had to live a poor life from hand to mouth. He was later recruited in the Assam Rifles at a very young age. In 1972, due to the abject poverty faced by his family in Mizoram, he had to resign from the Assam Rifles and head home to help uplift his family. In 1973, he started working as Hindi teacher under the Government of Mizoram. After having served at various places within Mizoram under different capacities of teaching, he retired in 2008. He never had the opportunity to attend any formal education throughout his childhood, he had to pursue his education as private candidate until he received his Master of Arts degree in Hindi Literature from Agra University in 1991. He also received his B.Ed, M. Ed (Nishnat), Diploma Training and Gahan from Central Hindi Training Institute, Agra on deputation from the Government of Mizoram while in service - he was the topper in all of these.

3. Throughout his career, Shri Kamlova's concern for the people of Mizoram towards national integration and for the overall development of the Mizo tribal community has moved his body and soul to work for the propagation of the Hindi language and literature. In his effort, he has made many achievements in the field and has even earned valuable recognitions not only in his home state, but also at the national level. In the process, he has been placed at important positions in various aspects of his field of activity, some of which include President, Lunglei District Hindi Teachers' Association, Mizoram (1978-79); President, All Mizoram Hindi Teacher's Association (1999-2000); Chairman, Academic Committee, Mizoram Hindi Prachar Sabha (2000-2001); Chairman, Mizoram Hindi Examination Board (2004-2005); Chief Editor, Mizoram Hindi Prachar Sabha Jubilee Souvenir; Principal, Rashtrya Bhasha Mahavidyalay; Expert in the committee for selection of Hindi Teachers in Mizoram etc.

4. Shri Kamlova has also authored a number of books, poems, songs, etc. in Hindi literature in his endeavor for Hindi propagation and promotion of national integration. He has to his credit translation of 'Pariksha' by Prem Chand in 2009 and 'Do Baanke' in 2007 into Mizo language. He has authored the book `Mizo Janjaatiyon ka Parichayaatmak Sanchhipta Itihaas' (An Introductory Brief History of the Mizo Tribe)' (2016); the Mizo- Hindi Parallel book, `Madhyakaalin Mizo Kaavya Ke Sath Amar Gaayak" (2018) also wrote the song " Hum ek the, hum ek hai" and " Vande Mataram" in the 90's for national integration. In 2006, he translated into Hindi the book `Shoorveer Khuangchera' written in Mizo by Prof. Laltluangliana Khiangte and the book 'Rani Ropuliani' written in Mizo by Prof. Laltluangliana Khiangte. He has also to his credit, the Hindi-Mizo Dictionary with 29000 words for the Mizo society to learn Hindi. He has also authored Hindi Text books for various classes.

5. Shri Kamlova has received various awards and honours including 'Teacher's Award' conferred by the Young Mizo Association, Bawngkawn Branch, Aizawl, Mizoram in 1997; Bhasha Bharti Award 2003-04' by Central Institute of Indian Languages, Mysore; 'Rashtrya Samman' awarded under the Ministry of Human Resource Development, Government of India in 2004-05 for his work "Hindi- Mizo Dictionary"; Felicitation received from the Young Gorkha Association and Mizoram Gorkha Women Association for his outstanding contribution to the field of Nepali literature, apart from Hindi in 2006; the prestigious 'Zonet Award' of Mizoram awarded in 2007 for his outstanding contribution in the literature of different tongues than his own mother tongue; Felicitation for prominence by the Young Mizo Association, Salem Veng Branch, Aizawl, Mizoram in 2010; 'Most Outstanding Lifetime Achievement award' conferred at the National Award Felicitation Celebration organized by Universal Hindi Communication at Raj Bhavan Durbar Hall, Aizawl, Mizoram in 2010; `Surya Sansthan Award' by Surya Sansthan, Noida for his work "Hindi- Mizo Dictionary" (2016) etc.





श्री सी. कामलौवा

मिजोरम सरकार के सेवानिवृत्त शिक्षक श्री सी. कमलोवा, मिज़ोरम के एक प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। वे मिज़ोरम में हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार के क्षेत्र से जुड़े महानायकों में से एक हैं।

2. श्री कामलौवा का जन्म 17 नवंबर, 1948 को तत्कालीन छिम्पटूइपुई जिले (अब लोङ्गटलाई जिला) के एक छोटे से गाँव मम्पुई में हुआ। वह 6 वर्ष की आयु से ही, 7 वीं असम राइफल्स में सेवा दे रहे अपने पिता की तैनाती वाले विभिन्न स्थानों पर उनके साथ रहे हैं। पिता जी की सेवानिवृत्ति के उपरांत, उनके मिज़ोरम वापस बस जाने पर श्री कामलौवा को 13 साल की आयु में नेफ़ा (अब अरुणाचल प्रदेश) में अत्यंत गरीबी में रहने को मजबूर होना पड़ा । बाद में वे अत्यंत कम आयु में असम राइफल्स में भर्ती हुये । 1972 में, जब मिजोरम में उनका परिवार अत्यंत गरीबी का सामना कर रहा था, तब वे अपने परिवार को संभालने में सहायता प्रदान करने लिए असम राइफल की नौकरी से इस्तीफा देकर वापस घर आ गए। 1973 में, उन्होंने मिज़ोरम सरकार के तहत हिंदी शिक्षक के रूप में काम करना शुरू किया। मिजोरम में विभिन्न स्थानों पर शिक्षण कार्य से जुड़े विभिन्न पदों पर सेवाएं देने के बाद, वे वर्ष 2008 में सेवानिवृत्त हो गए। उनको अपने पूरे बचपन में कभी भी कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला और उन्हें वर्ष 1991 में आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए. करने तक एक प्राइवेट छात्र के रूप में ही शिक्षा प्राप्त करना पड़ा। मिजोरम सरकार की ओर से सेवा के दौरान प्रतिनियुक्ति पर उन्होंने मिजोरम सरकार से प्रतिनियुक्ति पर सेवा में रहते हुए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, आगरा से बी.एड, एम एड (निष्णात), डिप्लोमा प्रशिक्षण और गहन की डिग्री भी प्राप्त प्राप्त की और वे इन सभी में अव्वल रहे ।

3. अपने पूरे करियर के दौरान, श्री कामलौवा, राष्ट्रीय एकीकरण और मिज़ो आदिवासी समुदाय के समग्र विकास की दिशा में मिज़ोरम के लोगों के प्रति चिंतित रहने के कारण उन्होंने अपने तन और मन को हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार–प्रसार में झोंक दिया। अपने इस प्रयास में, उन्होंने इस क्षेत्र में कई उपलब्धियां हासिल की और न केवल अपने गृह राज्य में, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी उन्होने महत्वपूर्ण ख्याति अर्जित की है। अपने गतिविधि के क्षेत्र में वे महत्वपूर्ण पदों पर पदासीन रहे जिनमें अध्यक्ष, लुंगलेई जिला हिंदी शिक्षक संघ, मिज़ोरम (1978–79); अध्यक्ष, अखिल मिज़ोरम हिंदी शिक्षक संघ (1999–2000); अध्यक्ष, अकादमिक समिति, मिजोरम हिंदी प्रचार सभा (2000–2001); अध्यक्ष, मिजोरम हिंदी परीक्षा बोर्ड (2004–2005); मुख्य संपादक, मिज़ोरम हिंदी प्रचार सभा जुबली स्मारिका; प्राचार्य, राष्ट्रभाषा महाविद्यालय; मिज़ोरम में हिंदी शिक्षकों की चयन समिति के विशेषज्ञ आदि शामिल हैं ।

4. श्री कामलौवा ने हिंदी प्रचार और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के अपने प्रयास में हिंदी साहित्य में अनेक पुस्तकों, कविताओं, गीतों आदि की भी रचना की। उन्हें प्रेमचंद द्वारा रचित "परीक्षा" को वर्ष 2009 में और "दो बाँके" को वर्ष 2007 में मिज़ो भाषा में अनुवाद करने का भी गौरव प्राप्त है। उन्होंने 'मिज़ो जनजातियों का परिचयात्मक संक्षिप्त इतिहास' (2016); मिज़ो; हिंदी समानांतर पुस्तक,' मध्यकालीन मिज़ो काव्य के सात अमर गायक "(2018); नब्बे के दशक में राष्ट्रीय एकता के लिए "हम एक थे, हम एक हैं" और "वंदे मातरम" गीत भी लिखे। वर्ष 2006 में, उन्होंने प्रोफेसर लल्टलून्गलिया खियांगटे द्वारा मिज़ो में लिखी पुस्तक 'शूरवीर खूंगचेरा' और 'रानी रोपुलियानी' नामक पुस्तक का हिंदी में अनुवाद किया। उन्हें मिज़ो समुदाय को हिन्दी सीखने में मदद करने के लिए 29000 शब्दों वाला "हिंदी– मिज़ो शब्दकोश" तैयार करने का गौरव भी प्राप्त है। उन्होंने विभिन्न वर्गों के लिए हिंदी पाठ्य पुस्तकें भी लिखी हैं।

5. श्री कामलौवा को, कई पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया जिसमें, वर्ष 1997 में यंग मिज़ो एसोसिएशन, बावंगकॉन शाखा, आइज़ॉल, मिज़ोरम द्वारा दिया गया 'शिक्षक पुरस्कार'; 'सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज, मैसूर द्वारा भाषा भारती पुरस्कार वर्ष 2003–04; मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उनके "हिंदी– मिज़ो शब्दकोश" के लिए वर्ष 2004–05; वर्ष 2006 में 'राष्ट्रीय सम्मान', हिंदी के अलावा, वर्ष 2006 में नेपाली साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए यंग गोरखा एसोसिएशन और मिजोरम गोरखा महिला एसोसिएशन से सम्मान; अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त, अन्य विभिन्न भाषाओं के साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए वर्ष 2007 में मिजोरम के प्रतिष्ठित; ज़ोनेट अवार्ड; वर्ष 2010 में यंग मिजो एसोसिएशन, सलेम वेंग शाखा, आइजोल, मिजोरम द्वारा उत्कृष्ठता सम्मान; वर्ष 2010 में ही राजभवन दरबार हॉल, आइज़ॉल, मिजोरम में यूनिवर्सल हिंदी कम्युनिकेशन द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह में 'मोस्ट आउटस्टैंडिंग लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड'; सूर्या संस्थान, नोएडा द्वारा उनके कार्य" हिंदी– मिज़ो शब्दकोश" के लिए 'सूर्य संस्थान पुरस्कार' (2016) आदि शामिल हैं ।